

विचार बिन्दु

देश का उद्धार विलासियों द्वारा नहीं हो सकता। उसके लिए सच्चा त्यागी होना आवश्यक है। -प्रेमचंद

भ्रष्टाचार अब बुरा नहीं है!



संपर्कें इटरनेशनल द्वारा हर बरस ज्ञारी होने वाला प्रधाचार बोध सूचकांक (करण्णन परसेशन इण्डेस) 2024 घटारे सामने है। इस सूचकांक में भारत कुल 180 दरों की सूची में 9.6 वें स्थान पर है। पिछले बरस के मुकाबले इस बरस हम एक पायदान नीचे उतरे हैं। पिछले बरस हमें एक सौ में से 3.9 अंक मिले थे (सौ अंक सभी उत्तम, शून्य अंक सबसे खराब), इस बार 3.8 अंक मिले हैं। सन् 2022 में हमारे साप 40 अंक थे। मतलब यह कि इस सूचकांक के अनुचार हमारे यहां प्रधाचार बढ़ा है। वैसे मात्र एक अंक कम होने से हमारी रैकिंग नीचे उत्तर याद देता लेना भी अनुचार नहीं होगा कि सन् 2016 में प्रधानमंत्री ने पायदान नीचे उत्तर याद देता लेना भी अनुचार नहीं होगा कि सन् 2016 में प्रधानमंत्री ने जो बदलाव प्रधाचार की कमर तोड़ देने के दावे किए गए थे। अब भी बहुत सुमिक्कन है कि सरकारी प्रवक्तव्य इस सूचकांक को भारत की छवि बदलने वाला और दुर्भावनापूर्ण बता दे ऐसा हमेशा ही होता है।

इस प्रधाचार सूचकांक के अनुचार वैश्विक औसत 43 अंक है और यह कई बरस से एक ही जाह ठहरा रहा है। लेकिन यह भी पायदान के दो-तीव्रांति दरों के अंक परिसर से कम है। ज़ाहिर है कि दुनिया की आवादी का बहुत बड़ा हस्ता प्रधाचार तो मिलता है। वैसे कम से कम 3.2 दरों ऐसे हैं जो दुनिया सन् 2012 के बाद से बढ़ाया है अथवा अपने यहां प्रधाचार को कम करने में कामयादी हासिल की है, लेकिन यह खुशी इस तथ्य से कम हो जाती है कि कम से कम 148 दरों ऐसे हैं जिनमें या तो प्रधाचार जहां या वहां ठहरा है या किर बढ़ा है। इस बार के सूचकांक में जलवायु परिवर्तन के संबंध में प्रधाचार की विवाद चर्चा की गई है और कहा गया है कि सारी नियामों ने बढ़ा बड़ी जनसंख्या वैश्विक तापन ('ग्लोबल हीटिंग') के गंभीर दुर्घात्मण में भाग लिया है। यह सूचकांक को बहुत से विवादों के लिए निश्चारित धनराशी की ओरी या दुर्घात्मणी हो रहा है। इसी तरह पर्यावरणीय क्षति को बढ़ावे लाले जलवायु संकट को नियंत्रित करने वाली नीतियों को प्रधाचार बहुत तेजी से अवश्यक कर रहा है।

मुझे इस सूचकांक का संस्करण लाने के बाद यह लगा कि यहां प्रधाचार को बहुत सफ्ट तरह से समझा गया है। सामान्यतः हमारी भी गलत काम को और खास तौर पर जिससे धराशी का लेन-देन नहीं हो, प्रधाचार कहते हैं। लेकिन जात तक वेल नहीं हो। इस सूचकांक के अनुसार प्रदर्श शक्तियों का निजी लाप्त के लिए दुरुपयोग प्रधाचार है। प्रधाचार को बहुत से विवादों के लिए नियंत्रित धनराशी की ओरी या दुर्घात्मणी हो रहा है।

यहां तक कि यहां पर्यावरणीय क्षति को बढ़ावे लाले जलवायु संकट को नियंत्रित करने वाली नीतियों को प्रधाचार बहुत तेजी से अवश्यक कर रहा है।

सूचकांक में जलवायु परिवर्तन के संबंध में प्रधाचार की विवाद चर्चा की गई है और कहा गया है कि सारी नियामों ने बढ़ा बड़ी जनसंख्या वैश्विक तापन ('ग्लोबल हीटिंग') के गंभीर दुर्घात्मण में भाग लिया है। प्रधाचार को बहुत से विवादों के लिए नियंत्रित धनराशी की ओरी या दुर्घात्मणी हो रहा है। इसी तरह पर्यावरणीय क्षति को बढ़ावे लाले जलवायु संकट को नियंत्रित करने वाली नीतियों को प्रधाचार बहुत तेजी से अवश्यक कर रहा है।

मुझे इस सूचकांक का संस्करण लाने के बाद यह लगा कि प्रधाचार को बहुत सफ्ट तरह से समझा गया है। सामान्यतः हमारी भी गलत काम को और खास तौर पर जिससे धराशी का लेन-देन नहीं हो, प्रधाचार कहते हैं। लेकिन जात तक वेल नहीं हो। इस सूचकांक के अनुसार प्रदर्श शक्तियों का निजी लाप्त के लिए दुरुपयोग प्रधाचार है। प्रधाचार को बहुत से विवादों के लिए नियंत्रित धनराशी की ओरी या दुर्घात्मणी हो रहा है।

यहां सबसे अहम काम की कठी गई है कि प्रधाचार से लड़ने के लिए हमें पारदर्शिता को अपनाना चाहिए। पारदर्शिता का अर्थ है कि कौन, क्यों, कैसे और कितना - इन सवालों का जवाब जानना। इस बात को अगर और सफ्ट किया जाता तो यह कि औपचारिक और अनौपचारिक विकास योजनाओं प्रयोगियों को पूरी तरह उत्तम करना। असल में पारदर्शिता हमें अर्थात आम जन को जन हित के लिए सक्षम करती है। सूचना चाहना और प्राप्त करना मानवाधिकार के लिए राष्ट्रियों के रिकॉर्ड देना। बातया गया है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ सुरक्षा प्राप्त होती है। ध्यान देने की बात यह है कि पारदर्शिता का अर्थ केवल सूचना हासिल हो जाना ही नहीं है, यह भी है कि सूचना आसानी से प्राप्त हो जाए। यह अपनी आजानी को गंवा रखना चाहता है।

यहां सबसे अहम काम की कठी गई है कि प्रधाचार से लड़ने के लिए हमें पारदर्शिता को अपनाना चाहिए। पारदर्शिता का अर्थ है कि कौन, क्यों, कैसे और कितना - इन सवालों का जवाब जानना। इस बात को अगर और सफ्ट किया जाता तो यह कि औपचारिक और अनौपचारिक विकास योजनाओं प्रयोगियों को पूरी तरह उत्तम करना। असल में पारदर्शिता हमें अर्थात आम जन को जन हित के लिए सक्षम करती है। सूचना चाहना और प्राप्त करना मानवाधिकार के लिए राष्ट्रियों के रिकॉर्ड देना। बातया गया है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ सुरक्षा प्राप्त होती है। ध्यान देने की बात यह है कि पारदर्शिता का अर्थ केवल सूचना हासिल हो जाना ही नहीं है, यह भी है कि सूचना आसानी से प्राप्त हो जाए। यह अपनी आजानी को गंवा रखना चाहता है।

मुझे हमारे समाज की और वर्तमान की सबसे बड़ी त्रासदी यह लगती है कि हमने अच्छे और बुरे के बीच भेद करना बंद कर दिया है। अब किसी की बुराई हमें आहत ही नहीं करती है। बुराई को जैसे हमने धो-पौँछ कर पाक साफ कर लिया है। और जब हम बुराई मानते ही नहीं हैं तो फिर उसे दूर करने की तो बात ही क्या करें?

हो कि आम नागरिक भी उसे समझ और उसका प्रयोग कर सके।

यहीं यह भी याद किया जा सकता है कि हमारे यहां काम का अधिकार प्राप्त करने के लिए किसी लंबी लड़ाई लड़ी गई और कैसे वह अधिकार प्राप्त किया गया लेकिन इस काम के लिए दुनिया की सारी नियामों के लिए दुरुपयोग प्रधाचार है। आज बहुत लंबी और परिजनों को सार्वजनिक नैकरियों या अनुबंध दिया जाना और उनके द्वारा अपने प्रायोजकों, दोस्तों और परिजनों को सार्वजनिक नैकरियों के रिकॉर्ड देना। बातया गया है कि भ्रष्टाचार कहीं भी हो सकता है - व्यापार में, सूचनायों में, मीडिया में और सिविल सोसायटी में। हवा स्वास्थ्य से लगाकर शिक्षा, सूचना या व्यापारीय क्षमता को बढ़ाव देने के लिए नियंत्रित धनराशी की ओरी या दुर्घात्मणी हो रहा है। इसी तरह पर्यावरणीय क्षति को बढ़ावे लाले जलवायु संकट को नियंत्रित करने वाली नीतियों को प्रधाचार बहुत तेजी से अवश्यक कर रहा है।

अन्य वार भारत के लिए देखा जाता है कि भ्रष्टाचार को बहुत छोड़ा जाए है और यह कि जिसका लिया जाता है कि भ्रष्टाचार को बहुत छोड़ा जाए है। कैसे जो कल तक प्रधाचार के लिए दुरुपयोग के रिकॉर्ड देना। बातया गया है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ सुरक्षा प्राप्त होती है। ध्यान देने की बात यह है कि पारदर्शिता का अर्थ केवल सूचना हासिल हो जाना ही नहीं है, यह भी है कि सूचना आसानी से प्राप्त हो जाए। यह अपनी आजानी को गंवा रखना चाहता है।

भरत के लिए देखा जाता है कि भ्रष्टाचार को बहुत छोड़ा जाए है और यह कि जिसका लिया जाता है कि भ्रष्टाचार को बहुत छोड़ा जाए है। कैसे जो कल तक प्रधाचार के लिए दुरुपयोग के रिकॉर्ड देना। बातया गया है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ सुरक्षा प्राप्त होती है। ध्यान देने की बात यह है कि पारदर्शिता का अर्थ केवल सूचना हासिल हो जाना ही नहीं है, यह भी है कि सूचना आसानी से प्राप्त हो जाए। यह अपनी आजानी को गंवा रखना चाहता है।

दूसरी ओर भारत के लिए देखा जाता है कि भ्रष्टाचार को बहुत छोड़ा जाए है और यह कि जिसका लिया जाता है कि भ्रष्टाचार को बहुत छोड़ा जाए है। कैसे जो कल तक प्रधाचार के लिए दुरुपयोग के रिकॉर्ड देना। बातया गया है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ सुरक्षा प्राप्त होती है। ध्यान देने की बात यह है कि पारदर्शिता का अर्थ केवल सूचना हासिल हो जाना ही नहीं है, यह भी है कि सूचना आसानी से प्राप्त हो जाए। यह अपनी आजानी को गंवा रखना चाहता है।

उत्तर भारत यह भी लगता है कि हमारा पारंपरिक सोच भी कहीं न कहीं भ्रष्टाचार की इस स्वीकारता के लिए उत्तरदारी है। हरिशंकर परसाई ने सफ्ट करने के लिए देखा जाता है कि भ्रष्टाचार को बहुत छोड़ा जाए है और यह कि जिसका लिया जाता है कि भ्रष्टाचार को बहुत छोड़ा जाए है। कैसे जो कल तक प्रधाचार के लिए दुरुपयोग के रिकॉर्ड देना। बातया गया है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ सुरक्षा प्राप्त होती है। ध्यान देने की बात यह है कि पारदर्शिता का अर्थ केवल सूचना हासिल हो जाना ही नहीं है, यह भी है कि सूचना आसानी से प्राप्त हो जाए। यह अपनी आजानी को गंवा रखना चाहता है।

मुझे हमारे समाज की और वर्तमान की सबसे बड़ी त्रासदी यह लगती है कि हमने अच्छे और बुरे के बीच भेद करना बंद कर दिया है। अब किसी की बुराई हमें आहत ही नहीं करती है। बुराई को जैसे हमने धो-पौँछ कर पाक साफ कर लिया है। और जब हम बुराई मानते ही नहीं हैं तो फिर उसे दूर करने की तो बात ही क्या करें?

-अतिथि संपादक,
डॉ. द



World Human Spirit Day

So many of our statements nowadays end with 'the world as we know it.' World Human Spirit Day is a celebration of the fact that what we know about our own world is limited and superficial. It is a day to wonder at our achievements on this planet as humans, and to contemplate the endless possibilities we have as spirits. A day to give a higher power thanks for what we have and what we don't have, for making us who we are and for giving us the ability to touch others.

#J'ADORE

Mehendi Mania

Weddings are incomplete without a *mehendi* event, and these stunning *mehendi* designs for the brides-to-be will leave all amazed.



Bhimthadi Horse.

The Bhimthadi breed was developed in Pune district in 17th and 18th centuries during the Maratha rule, by crossing Arabian and Turkic breeds with local ponies. These horses proved excellent for Maratha forces in fighting the Mughal army in the hilly terrains of Western Maharashtra, where lighter and smaller steeds were essential. During their conquests in the 18th century, the Marathas were proud to claim that the Deccan horses had quenched their thirst with waters of the Indus. The warrior and Maharajah Maratha Yashwantrao Holkar (1776-1811) is reputed to have always battle mounted a mare named *Mahua*, of Bhimthadi breed.

Anjali Sharma
Senior Journalist & Wildlife Enthusiast

'Bhimthadi' combines 'Bhima' with 'thadi,' meaning riverbank. This breed is primarily located on the Deccan plateau, spanning areas in Pune, Satara, Solapur, Ahmednagar, Sangli, and Kolhapur districts.

A poetic description of the approaching Bhimthadi goes thus

Once the pride of the Maratha empire, the Bhimthadi horse had fallen into oblivion in the past 200 years. Its recognition now, as a separate indigenous breed, could spell a new future for the steed. Having faced a prolonged period of negligence for about 200 years, the Deccani horse, locally known as the Bhimthadi horse, has now been officially recognized as an independent breed of horses, in the 17th and 18th centuries, in a troop of Maratha horsemen, charging at the enemy and driving them off the field.

During his lifetime, Shivaji Maharaj had a total of 7 horses. Some of these horses were stallions and some mares. The 7 horses were Moti, Gajra, Indrayani, Vishwas, Ranbir, Turangi, Krishna. Many historians are of the opinion that the last horse ridden by Shivaji Maharaj was Krishna, a white stallion.

Variants of Bhimthadi are native to the Deccan Plateau. Historically, the steed was an inherent part of the Maratha Cavalry, used effectively in battles



on the hilly terrain. It also functioned as a pack-horse of the Maratha Confederacy. The breed's contribution in enabling warriors of the Maratha forces, to defeat invading and occupying armies, is exemplary. Regrettably, the Bhimthadi steeds, that were used by Shivaji Maharaj in guerrilla warfare, never figured in the list of the seven recognised breeds of India. Hence, we endeavoured to put things in the right perspective, and finally succeeded. We gathered support, forming a team from the Agricultural Development Trust (ADT), Baramati and the National Research Centre (NRC) on Equines, Bikaner. Dr Sharad Mehta, Head of the Regional Station of NRC, Bikaner led a delegation of scientists to Baramati and adjoining areas, interacting with farmers and horse keepers to get an insight into the hardiness and utility of the breed," Pawar said.

According to Mehta, blood samples of over 1,000 Bhimthadi horses were tested at the National Research Centre on Equines, Bikaner while DNA testing of over 500 samples was done to ensure that the animal does not share its DNA with any of the established breeds in India.

"The process took about three years. Of the 66 applications received for getting the recognition, eight have been approved by the committee and Bhimthadi

#NAMED FAMED



horse is one of them. The gazette notification is expected in some time," Mehta said. "As per the government records, the current population of Bhimthadi horses in India is 5,134," he said. Pawar plans to introduce Bhimthadi horses in sports like polo after getting the official stamp. Breed shows and educational workshops would also be conducted through the state, to retain the breed characteristics and to improve breeding practices of the breed.

Historians chronicles say that a major trade in Arabian horses in the ports of Deccan began after the Bahamani Sultanate revolted against the Delhi Sultanate.

A very rich trade of horses from Arab and Turkey and Iran, included heavy war horses, were sought by the Mughals and the Sultans of the Deccan. The problem was that they were always imported, especially from Iran.

The Bhimthadi breed was developed in Pune district in 17th and 18th centuries during the Maratha rule, by crossing Arabian and Turkic breeds with local ponies. These horses proved excellent for Maratha forces in fighting the Mughal army in the hilly terrains of Western Maharashtra, where lighter and smaller steeds were essential. During their conquests in the 18th century, the Marathas were proud to claim that the Deccan horses had quenched

their thirst with waters of the Indus. The warrior and Maharajah Maratha Yashwantrao Holkar (1776-1811) is reputed to have always battle mounted a mare named *Mahua*, of Bhimthadi breed.

It seems that the Marathas raised a specific breed from the end of 18th century. According to local oral tradition from early 19th century, the breed was crossed with 500 Arabian horses and mares, obtained by the Nizam and nobles of Hyderabad directly from Arabia. The breed is described as 'Bhimthadi' in British sources.

However, the breed was allowed to degenerate during British rule in India. The government of Gujarat took an initiative in 2010 to perform research on saving Bhimthadi and other near extinct breeds.

Validation of the breed

In his description of the economy of India at the end of the 19th century, Sir George Watt was very impressed with this breed, he considers it one of the best in India. He reports that the best ponies are named 'Dhangar' or 'Khilari.' People see them as a separate breed, but Watt believes that this distinction comes from a difference in breeding practices, the breeders from the Dhangar community used to castigate their animals. The latter raise groups of 20 to 30 ponies. After their conquest of Maratha territories, the British encouraged inhabitants of the Bombay area to continue horse breeding

in order to restore the old characteristics that are useful to them in the breed, by investing from a stud farm in Aleagan Paga. The experiment was abandoned fifteen years later in 1842. Famines and various British conquests, that hit the region in the 19th century, wiped out the livestock of Marathas. In 1850, the so-called Deccan Race of the South completely disappeared. In 1898, the British could no longer find these ponies for their regiments, and therefore replaced them with mules, because the race was determined primarily by speed and campaign of Afghanistan. In 1907, the race horse breeder, Sir Humphrey Francis De Trafford reported that the Deccan breed lives 'bad days.'

Livestock distribution

Geographical origin of different Indian horse breeds

The breed originates from the valley of the Bhima River in the Pune District, hence its name, *Bhimthadi*. Deccan has become extremely rare. In 1998, according to the count sent to FAO, they numbered less than 100. It was later added to the list of indigenous breeds of horses by FAO, around 1999, with *Chummarji* and *Sikang*, two other endangered breeds. CAB International (2002) considers race to be 'virtually extinct'. The conservation status of the Deccan breed is listed as 'critical' by the FAO in 2007.

rajeshsharma1049@gmail.com

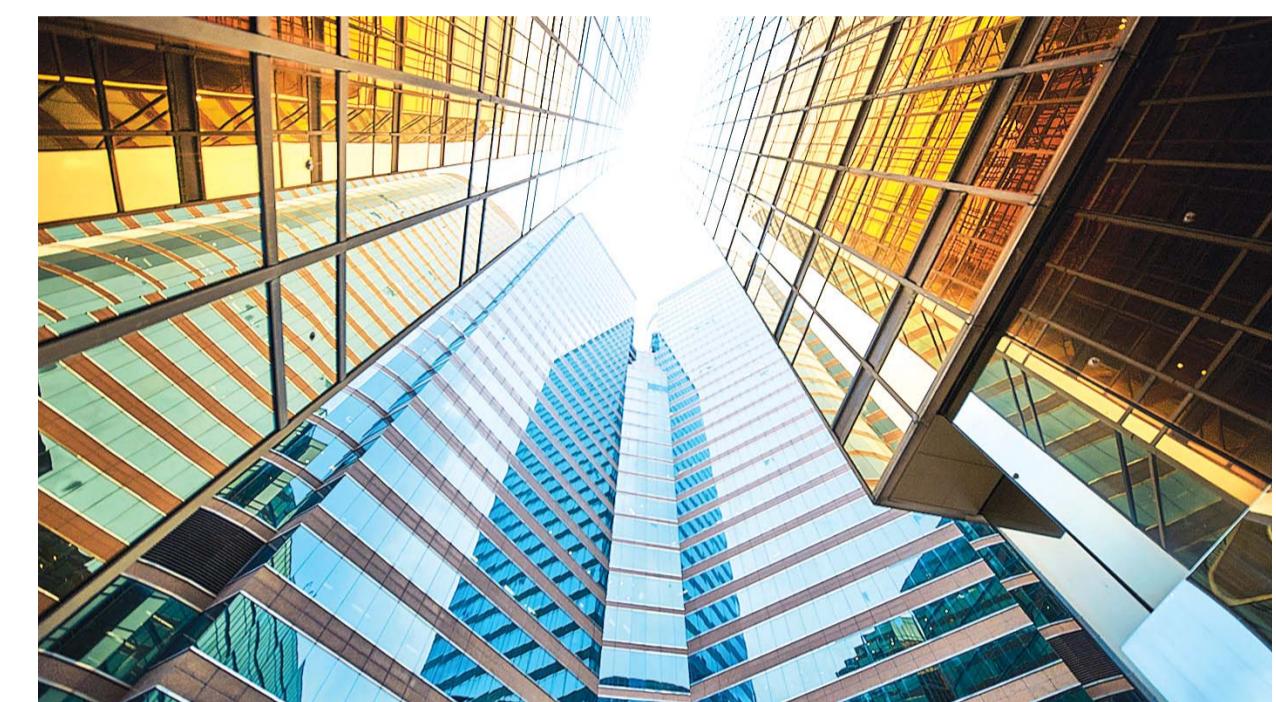


Streets of Bombay.

#SMART-MATERIAL

Warm or Cool Buildings

As global warming causes increasingly frequent extreme weather events and variable weather, there is a need for buildings to be able to adapt, few climates require year-round heating or year-round air conditioning.



Chameleon-like building material changes its infrared colour, and how much heat it absorbs or emits, based on the outside temperature. On hot days, the material can emit up to 92% of the infrared heat it contains, helping cool the inside of a building. On colder days, however, the material emits just 7% of its infrared, helping keep a building warm.

"We've essentially figured out a low-energy way to treat a building like a person, you add a layer when you're cold and take off a layer when you're hot," says assistant professor Po-Chun Hsu of the University of Chicago's Pritzker School of Molecular Engineering (PME).

This kind of smart material lets us maintain the temperature in a building without huge amounts of energy." According to some estimates, buildings account for 30% of global energy consumption and emit 10% of all global greenhouse gas. About half of this energy footprint is attributed to the heating and cooling of interior spaces.

"For a long time, most of us have taken our indoor temperature control for granted, without thinking about how much energy it requires," says Hsu, who led the research published in *Nature Sustainability*. "If we want a carbon-negative future, I think we have

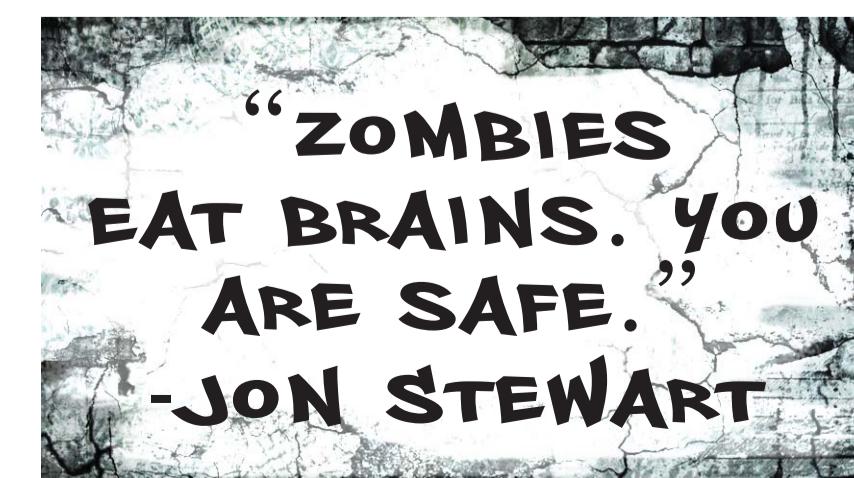


Hsu and colleagues designed a non-flammable 'electrochromic' building material that contains a layer that can take on two conformations, solid copper that retains most infrared heat, or a watery solution that emits infrared. At any chosen trigger temperature, the device can use a tiny amount of electricity to induce the chemical shift between the states, either by adding copper into thin film, or stripping that copper off. In the new paper, the device can switch rapidly and reversibly between the metal and liquid states.

They showed that the ability to switch between the two conformations remained efficient even after 1,800 cycles. Then, the team created models of how their material could cut energy costs in typical buildings in 15 different US cities. In an average commercial building, they reported, the electricity used to induce electrochromic changes in the material, would be less than 0.2% of the total electricity usage of the building, but could save 8.4% of the building's annual HVAC energy consumption.

"Once you switch between states, you don't need to apply any more energy to stay in either state," says Hsu. "So, for buildings where you don't need to switch between these states very frequently, it's really a tiny amount of electricity." So far, Hsu's group has only created patches of the material that measure about six centimetres across. However, they imagine that many such patches of the material could be assembled like shingles into larger sheets. They say that the material could also be tweaked to use different, custom colours, the watery phase is transparent and nearly any colour can be put behind it without affecting its ability to absorb infrared. The researchers are now investigating different ways of fabricating the material. They also plan to probe how intermediate states of the material could be useful. "We demonstrated that radiative control can play a role in controlling a wide range of building temperatures throughout different seasons," says Hsu. "We're continuing to work with engineers and the building sector to look into how this can contribute to a more sustainable future."

THE WALL



"ZOMBIES EAT BRAINS. YOU ARE SAFE." - JON STEWART

BABY BLUES



By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS



By Jerry Scott & Jim Borgman



Lotus Mehendi Design

Jewellery Mehendi Design



This year, the lotus motif has gained immense popularity among all the floral motifs. The mehendi design imitates the Mughal era paintings and the floral motifs which are often used while building gateways. Lotus mehendi designs are the new rage and you must try it for your big day to add charm to your look.

